अबके फागण में | By Hari Sharma

अबके फागण में तू ऐसी जुगत भिड़ा दे रे
कन्हैया घर परिवार के सागे मन्ने खाटू बुला ले रे

आमदनी इतनी कम है, गुज़ारा चलता नहीं है
खाटू आऊं मैं कैसे चिंता मन में यही है
आने जाने का थोड़ा खर्चा भिजवा दे रे
कन्हैया घर परिवार के सागे मन्ने खाटू बुला ले रे

नौकरी साहूकार की छुट्टी देगा नहीं वो
करू मिन्नत कितनी भी सुनेगा कुछ भी नहीं वो
कैसे भी दो चार दिनों की छुट्टी दिला दे रे
कन्हैया घर परिवार के सागे मन्ने खाटू बुला ले रे

सुना है खाटू नगरी दुल्हन के जैसी सजती
भगत बेसुध हो नाचे बरसती है वहां मस्ती
ऐसा नज़ारा अद्भुत मोहित मुझे दिखा दे रे
कन्हैया घर परिवार के सागे मन्ने खाटू बुला ले रे

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%85%e0%a4%ac%e0%a4%95%e0%a5%87-%e0%a4%ab%e0%a4%be%e0%a4%97%e0%a4%a3-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82-by-hari-sharma/